ध्यान देने योग्य बातें

- यदि सुविधा हो तो तालाब में भैंस का प्रवेश होते रहना चाहिए।
- तालाब का जल स्तर एक मीटर से नीचे नहीं जाना चाहिए।
- प्रत्येक माह तालाब में विद्यमान मछली की बढ़ौतरी बारे जानकारी लेते रहना चाहिए।
- यदि तालाब में घुली ऑक्सीजन की मात्रा में कमी आ जाए तो मछली पानी की ऊपरी सतह पर आकार मुंह खोलकर वायुमण्डल से सांस लेने का प्रयत्न करती है। मछली बेचैन होती है तथा तालाब की उपरी सतह पर मछलियों के सिर ही सिर नजर आते है। ऐसा प्रायः जल्दी सुबह के समय उस वक्त होता है जब बादल वाली रात हो या लगातार बादल चल रहे हों। ऐसी अवस्था में हो सके तो तुरन्त तालाब में ताजा जल अधिक मात्रा में डालें। स्वयं पानी में तैरना शुरू करें। तालाब के पानी को लम्बी छड़ियों व लाठियों से फैटें ताकि वायुमण्डल से ज्यादा ऑक्सीजन पानी के साथ घुल सके।
- पानी के सांप भी तालाब की मछली को खाते रहते हैं। यदि इनकी संख्या अधिक हो तो ये काफी हानि पहुंचाते हैं। इनका सबसे बढ़िया बचाव का ढंग सांपों को मारना ही है। जब सांप ने मछली पकड़ ली होती है तो उसको निगलने हेतु यह पानी से बाहर आता है। इसी अवस्था में इसको आसानी से मारा जा सकता है। इसके अतिरिक्त यदि कहीं से फटे पुराने जाल मिल जाएं तो तालाब के गिर्द उनको फैलाने से भी सांप उनमें फंस जाते हैं। इनके नियंत्रण हेतू एक अन्य विधि यह है कि जंगली मछलियों को पकड़ कर उन्हें कुंडी में फंसाकर तालाब में डोरी द्वारा बांध कर लटका दिया जाता है। पानी के सांप को मछली का चारा बेहद मनपसंद होता है इसलिए वे कुंडी द्वारा फंस जाते हैं।
- मछली को चोरी से बचानाः यदि आपका तालाब निगरानी से दूर है तो उसमें से मछली चोरी की संभावना हो सकती है। ऐसी अवस्था में चोर प्रायः जल्दी से फैंकवां जाल (कास्ट नैट) चला कर मछली पकड़ कर भागने का प्रयत्न करता है। कुंडी डोरी द्वारा मछली चोरी करने में अधिक समय लगेगा। अतः चोर इस विधि का प्रयोग कम करेगा । उपरोक्त स्थिति में मछली को चोरी से बचाने हेतू बांस की छोटी जाति की छड़ियां झाड़ीदार शाखाओं सहित तालाब में फैला कर रखनी चाहिए । इसी प्रकार आइपोमिया नामक झाड़ी को तालाब में डाल देना चाहिए। ऐसा करने से चोर का जाल झाड़ियों पर फंस जाएगा और मछली चोरी नहीं होगी ।

जल का पी० एच० ज्ञात करने की विधि

बजार में पी०एच० पेपर की डिब्बी (पैकेट) मिल जाती हैं। इस पैकेट में प्रायः 6 प्रकार के विभिन्न रंगों को दर्शाता चिन्हित स्ट्रैप साथ में होता है यथा–

पी० एच० 1 2 5 7 9 11

पी० एच० पेपर के रोल में 3"–4" का टुकड़ा काट कर तालाब के जल में डुबो दिया जाता है। ऐसा करने पर यह कागज अपना रंग परिवर्तित कर लेता है। इस परिवर्तित रंग को स्ट्रैप में दर्शाए रंग के साथ मिलान करके ज्ञात किया जाता है कि पानी का पी० एच० कितना है।

यदि आपके पास पी० एच० पेपर की सुविधा नहीं है तो आप बाजार से खाने वाला पान ले आएं। पान मुंह में चबा कर तालाब के जल में थूक दें। यदि थूक का रंग लाल बना रहता है तो तालाब का पानी अम्लीय नहीं है। यदि थूक का रंग परिवर्तित होकर नीला हो जाता है तो तालाब का पानी अम्लीय (तेजाबी) है।

सम्पर्क सूत्रः मत्स्य भवन
मात्स्यिकी निदेशालय, हिमाचल प्रदेश,
चंगर सैक्टर– बिलासपुर– 174 001
फोन/फैक्सः 01978–224068
ई मेल: fisheries-hp@nic.in
वैबसाईट : hpfisheries.nic.in

रा० मु० हि० प्र०, शिमला–1826–मत्स्य–2015–23–07–2015––500 प्रतियां।

संग्रहण पूर्व तालाब की तैयारी

भाग—ग

मत्स्य पालन में चूने व खाद का प्रयोग

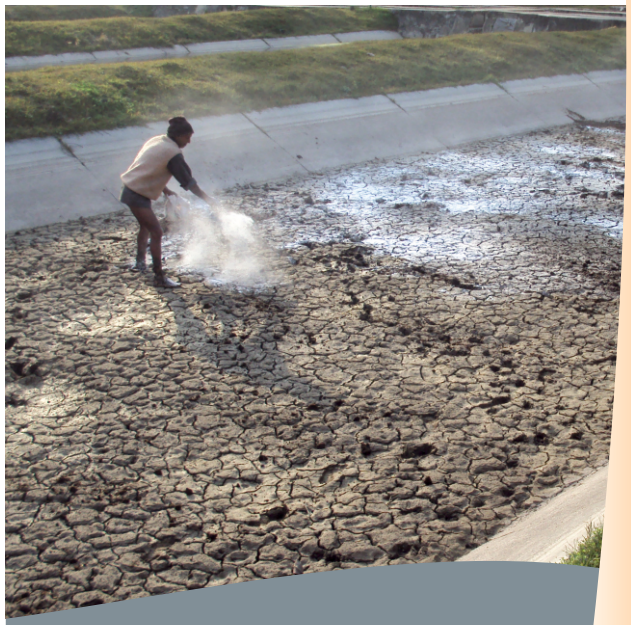

मात्स्यिकी निदेशालय
हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर।

चूने का प्रयोग

जिस जलक्षेत्र में मत्स्य पालन किया जा रहा है, वह या तो अम्लीय (तेजाबी) होगा अन्यथा क्षारीय होगा। जल की जांच पी0एच0 पेपर से की जा सकती है। साधारणतया पी0 एच0 7.5 पर जल उदासीन होता है तथा इससे नीचे के क्रम में जल अम्लीय होता जाता है। अम्लीय जल में मत्स्य उत्पादन कम होता है। यदि पी0 एच0 8.0 भी है तब भी जलक्षेत्र में चूने का प्रयोग अति आवश्यक है। यदि तालाब की मिट्टी क्षारीय है या अम्लीय है तो इसको सामान्य बनाने के लिए तालाब में चूने का प्रयोग आवश्यक है। निम्न तालिका अनुसार तालाब में चूने का प्रयोग किया जा सकता है:–

पी.एच.	चूने की मात्रा (कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर)	पी.एच. जो प्राप्त होगा
4.7	7050	7
4.8	6720	7
4.9	6550	7
5.0	5040	7
5.1	4410	7
5.2	3900	7
5.3	3400	7
5.4	2890	7
5.5	2010	7
5.6	1260	7
5.7	910	7

इसके अतिरिक्त चूने का प्रयोग मछलियों के लिए लाभदायक ही है और कभी–कभी इसका प्रयोग किया जा सकता है। विशेषतः निम्न परिस्थितियों में:

- पानी का पी.एच.जब कम हो जाए,
- तालाब में पानी की कठोरता 20 पी.पी.एम. से कम हो,
- पानी की क्षारीयता कम हो,
- जब तालाब की सतह में काफी कीचड़ हो और बहुत दिनों से उसकी सफाई न की गई हो।
- जब तालाब के तल में काफी जैविक खाद हो और उसमें आक्सीजन की कमी हो, और
- जब मछलियों में बीमारी फैलने की संभावना हो।

तालाब में खाद का प्रयोग

तालाब में खाद के प्रयोग से मछलियों के लिए प्राकृतिक भोजन को बढ़ावा मिलता है जो कि मछलियों के उत्पादन के लिए आवश्यक है। जलीय क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने हेतु निम्नानुसार खादों का प्रयोग किया जाना चाहिए –

क्र0	खाद का नाम	मात्रा कि0ग्रा0	
		प्रति हैक्टेयर	प्रति बीघा
1.	ताजा गोबर	10000 से 15000	1000
2.	गली सड़ी खाद (कम्पोस्ट)	10000 से 12000	900
3.	बायोगैस सलरी	20000 से 30000	2000
4.	पोल्टरी मैन्योर (मुर्गियों की बीठ)	3000 से 4000	300
5.	पिग मैन्योर (सुअर का मल त्याग)	2000 से 3000	250

रासायनिक खादें (वार्षिक)

क्र0	खाद का नाम	मात्रा कि0ग्रा0	
		प्रति हैक्टेयर	प्रति बीघा
1.	यूरिया	75 से 100	6 से 8
2.	अमोनिया सल्फेट	75 से 100	6 से 8
3.	सुपर फास्फेट	100 से 200	8 से 15

उपरोक्त दर्शाई गई सारणी में से 5000 से 10,000 कि0ग्रा0 जैविक खाद प्रति हैक्टेयर की दर से आरम्भ में प्रयोग कर ली जाती है तथा बाद में 1000 से 2000 कि0 ग्रा0 मासिक दर से किस्तों में प्रयोग की जाती है। खाद के प्रयोग से तालाब में विद्यमान पानी का रंग बदल जाएगा तथा इसकी पारदर्शिता कम हो जाएगी। ऐसा पलैंक्टन नामक सूक्ष्मदर्शी जीवों की संरचना के कारण होगा जो कि तालाब में संग्रहित की जाने वाली मछली बीज का आहार है। यह ज्ञात करने के लिए कि तालाब में पर्याप्त मात्रा में प्लॉकटोन तैयार हो गए है– अपना दांया बाजू कोहनी तक तालाब के जल में डूबो दें। उसके पश्चात् हथेली पानी के बीच में 90 डिग्री के कोण पर घुमा दें। यदि हथेली साफ दिखाई दे रही है तो प्लॉकटोन कम मात्रा में उत्पन्न हुआ है। यदि हथेली धुंधलापन लिए नजर आती है तो प्लॉकटोन पर्याप्त मात्रा में तैयार है तथा मत्स्य बीज तालाब में डाला जा सकता है।

मछली का बच्चा तालाब में डालने से पहले तालाब में दी जाने वाली खाद की मात्रा का 1/6 भाग तालाब में चारों ओर बिखेर देना चाहिए या पानी/ तालाब के किनारे में जमा कर देना चाहिए।